# "इंतजार मत छोड़ो"

"आपका सपना था, एक डॉक्टर बनाना और दूसरों की मदद करना। अब तुम्हारे सपना साकार बन गया है। इसके बारे में हमसे कुछ बताओ, डॉक्टर जी"

यह एक इंटरव्यूयर ने मोहन जी से कहा।

तब मोहनजी ने जवाब दिया कि :- "बचपन से ही मेरा सपना था एक डॉक्टर बनाना। मैं इस पद पर पहुँचने में बहुत ही मुसीबतें और मुश्किलें मुझे सामना करना पड़ा। मैं सपने में ही नहीं सोचा कि मुझे मेरी लक्ष्य पर पहुँच सकेगी। अब मैं बहुत खुश हूँ। मेरी जीवन की हरएक पल्लू मुझे भूल नहीं सकता। वो है मेरी जीवन कहानी।"

"डॉक्टर जी, हम सब केलिए आपकी कहानी बता सकते है?" प्रेक्षकों ने आकांशा से उसको देखा।

"जरूर, मेरी कहानी तुम सब केलिए प्रेरणादायक होगा। "मेरी जीवन इंतजार से भरा था।"

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 112

मोहनजी कहानी शुरू किया :- " मेरा एक छोटा गरीब परिवार है। बचपन में ही मेरी पिता इस दुनिया को छोड़कर चल गयी थी। मेरी छोटी घर में माँ, एक छोटी बहन और मैं थी। हम दोनों स्कूल नहीं जाता था, क्योंकि स्कूल में भर्ती करने की पैसे तक हमारे पास नहीं है। मैं हर दिन स्कूल की ओर जाते छात्रों को देखकर ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि भगवान, हमें इसी तरह स्कूल जा सकें। मेरी घर की इस दयनीय हाल से मेरा सपना मुझे असंभव लगा और वही इंतज़ार ही छोड़ गयी थी।

एक दिन मैं स्कूल छात्रों को देख रहे थे। तब वह स्कूल की टीचर मेरे पास आया और पूछा "बेटा, तुम क्यों स्कूल नहीं जाते हैं?" तब मैंने बताया कि गरीबी के कारण हमारे पास पैसे नहीं हैं। तब उन्होंने अपने पैसे लेकर मुझे स्कूल पर भर्ती करवाया। मुझे आश्चर्य लगा। मेरी चेहरा खुशी से खिल उठे। ईश्वर कई रूप में हमारे सामने आता है। वे मेरी ईश्वर ही था।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

टीचर ने मुझसे पूछा "बेटा, तुम्हारी सपना क्या है ? मैंने बताया कि : "टीचर, बहुत धन्यवाद, तुम ही हमारी ईश्वर है। मेरी सपना एक डॉक्टर बनना है। लेकिन मेरी इंतजार छोड़ गयी थी।" तब टीचर ने उससे बताया : "मोहन, हमारे सामने कई समस्याएँ आऊँगा। लेकिन हम उसको डरकर नहीं भागना है। बदल में हिम्मत के साथ आगे बढाना है। अपना सपना साकार करना है। कभी इंतजार मत छोड़ो। तुम जरूर तुम्हारी लक्ष्य हासिल कर सकें।"

उसकी शब्दें मेरे लिए प्रेरणाजनक था। वे मुझपर एक नई शक्ति दिया। मैं मेहनत करके डॉक्टर बनाने की कोशिश शुरू किया।"

सब लोग मोहनजी की कहानी में डूब गयी थी। सबका नजर उसपर ही चल जाते थे। मोहनजी कहानी आगे बढाया :-

"मैं अच्छी तरह पढा। उच्च मार्क मिलने पर मुझे आगे पढ़ सका। हमेशा मेरे मन में मेरी टीचर की शब्द मौजूद थी।

~~और मैं एक डॉक्टर बन गया। मेरी सपना साकार बन गया।~~

एक दिन मेरी माँ की बीमारी बढ गयी थी और उसे आसपताल ले जाने के लिए मेरे परिचित व्यक्तियों से कुछ पैसे माँगा। लेकिन कोई मुझे ~~उसको~~ पैसे न दिया। सब सोचा कि ये गरीब है। ये जरूर पैसा नहीं लौटेगा। अंत में मेरी टीचर के पास जाकर कहा :- "टीचर मेरी माँ की बीमारी बढ गयी। ~~तुम~~ कृपया आप कुछ पैसा दे दो..." टीचर मुझे पैसे दिया। मैं दौड़कर माँ को आसपताल चलाया। लेकिन माँ को बचने न सका।

कुछ दिनों के बाद टीचर को देखा तब मैंने बताया कि "टीचर, मेरी माँ इस दुनिया को छोड़कर चली गयी। मैं जरूर आपकी पैसा लौटा देगी।" टीचर कहा "बेटा, तुम पढकर एक बेहतर पद अपनाएगा। तब तुम्हारी माँ ~~क~~ खुश होगा। इंतजार के साथ कठिन मेहनत और प्रार्थना रखिए। ईश्वर तुम्हारी रक्षा जरूर करेगी"। अपनी मंजिल हासिल करने तक इंतजार करें।"

Item Code: 952 Participant Code: 112

मैं कठिन मेहनत के बाद मेरा सपना साकार कर दिया और एक डॉक्टर बन गया। मैं जल्दी ही टीचर को खोजकर चला। ~~मैंने~~ टीचर एक छोटी घर में अकेला रहते हैं। मैंने पूछने पर आसपास के लोग ~~टीचर~~ बताया कि उसकी पति कुछ सालों पहले मर चुका था। दोनों बच्चों उसको छोड़कर विदेश जाया। अब वे अकेला रहता है।

मैंने टीचर को देखा तो मेरी आँखें आँसू से भीग गये थे। एक दुबल औरत, अकेला, क्षीणित हालत में मेरे सामने खड़ी है। वे मेरी देवता है, ईश्वर है। मैंने कहा कि "टीचर, मेरा सपना साकार हुआ, मैं अब एक डॉक्टर हूँ। आप के कारण मैं यहाँ पहुँचा। बताओ, आपको क्या चाहिए?"

तब उन्होंने जवाब दिया कि "बेटा, तुम्हारी इच्छा सफल हो गया है। इसके ज़्यादा मुझे क्या चाहिए।" मैंने बताया कि: "कुछ सालों पहले मेरे माँ को मुझे नष्ट हो गये थे। लेकिन अब मेरी माँ को मुझे वापस मिल गयी।" टीचर मुझसे कुछ नहीं इंतजार किया। यही सच्ची प्यार है।"

प्रेक्षकों की आँखों से आँसू बहने लगा। मोहनजी कहा "मैं मेरी टीचर को माँ की तरह देखभाल किया और मेरा साथ ही रहा। यह है मेरी कहानी।"

दोस्तों, आप सबसे मुझे यह ही बताने का है जो मेरी टीचर मुझसे बताया। इंतजार मत छोड़ो। इंतजार कबतक करना है? अपने सपना साकार करने तक, लक्ष्य स्थान पर पहुँचने तक इंतजार करें। हमारी कठिन प्रयत्न का फल हम जरूर मिलेगा। इसके साथ यह बात भी मन में रखो कि हर व्यक्ति के विजय के पीछे एक व्यक्ति होगी। उन्हें हमेशा हमारे साथ रखना है, मत भूलना है। इससे हमारा जीवन सफल बन जाएगा।"

इंटरव्यूवर ने कहा "आपकी कहानी दिल को छूनेवाली था। हमारी जीवन में इंतजार का महत्व और कठिन प्रयत्न से जीवन विजय के बारे में आपने हमें सिखाया। आपकी जीवन हमारेलिए प्रेरणादायक था। धन्यवाद मोहनजी।"

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

उसने एक गहरी साँस ली। पूरी जिन्दगी की यादें एक बार फिर अपनी मन से चल गयी। उसने पीछे देखा। वहाँ उसकी ईश्वर या उसकी माँ या उसकी टीचर खड़ी हुई थी। माँ मोहन को देखकर मुस्कराया और वे दोनों एक साथ चलने लगा, हाथें जोड़कर। दोनों की आँखें आँसू से भर गया स्हा था। वे सीधे चलने लगा - एक माँ और बेटा।

x —— x

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 112

कब तक इंतज़ार करूँ...

मेरा सपना डॉक्टर.... असंभव सपना लगा, क्योंकि
लेकिन इंतज़ार करते थे, सपने देखते रहते थे।
बीमार माँ, इंतज़ार, टीचर पैसे देते हैं टीचर उपदेश डॉक्टर बना।
तब टीचर को नहीं देखता। टीचर वृद्धमंदिर में...
इंतज़ार के साथ कड़ी मेहनत
अकेला टीचर - माँ - ईश्वर
इसके ज्यादा मुझे क्या चाहिए।

Cancelled

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)